



समाद

पटना, 1 जनवरी, 2008 □ सप्ताहिक □ अंक-1 □ साल-1 □ इन्टरनेट संस्करण □ पेज-6 □ मूल्य- २ टाका

एकटा महाराज जे उद्यमी हेबाक
पहिल प्रयास केहाल

आखिर कियेक नहि विवाह
अइसन सिनेमा मैथिली में बनल



15 जनवरी से अहां लेल आनि रहल छी अहांक गामक 'समाद'



इ पलायन नहि छी,
इ विस्थापन छी
बिहारी एक मात्र
एहन समूह अछि जे
अपन गामक जमीन
बेच के दिल्ली, मुंबई
में घर लेत अछि
लाज तखन होइत
अछि जखन ओ
बिहारी कहैत अछि
बिहार में नीक सन
मकानो नहि अछि
भाई होयत केना
पंजाब में नीक
मकान लंदन में
रहैयवाल पंजाबी
बनबैत अछि

कतय जाइत छी, के छी हम

इंतजार खतम भेल, पाथर पर घास रोपबाक हमर इ प्रयास अछि. मिथिला-मिहिर बंद भ गेल. महाराज नहि रहलाह, के निकालत अखबार. मैथिलीक बाजार केहन अछि एकर एखन धारि मूल्यांकन नहि भेलय. एखनि धारि जे पत्रिका निकलल ओकरा निकालबाक जिम्मा एकटा गैर पत्रकारक हाथ में रहल. एहन में मात्र अंतिका एकटा उदाहरण अछि जे गौरीनाथ जी सन पत्रकार निकाल रहल छथि आ ओ नीक जेकां चलि रहल अछि. सवाल उठैत अछि जे आइ मिथिलाक अपन अखबार नहि अछि. एहन में मिथिलाक चिंता, मिथिलाक विकासक लेल के प्रयास करत. मैथिलक अधलाह समाचार पूरा दुनिया के भेट जाइत अछि, मुदा जे खुबी अछि, जे बदलाव भय रहल अछि या जे हेबाक चाहि ओकरा लेल वर्तमान अखबार में जगहक अभाव अछि. मिथिलाक संस्कृति पर लगातार प्रहार भय रहल अछि. काली पूजा पर दीपावली हाबी अछि. कोजागरा पर लखि पूजा छपि रहल अछि. जूड़-सितल खतम भय गेल, होली प्रभाव बढ़ल जा रहल अछि. रंगोली छपि रहल अछि, अरिपन के छापत? राम छपि रहल छैथ, सीताक लेल जगह नहि अछि. विकासक लेल एकता जरूरी अछि आओर एकता लेल पहचान. आइ मैथिल अपन पहचान ताकि रहल अछि. मुख्यमंत्री किसान रूप में राजस्थानक पगड़ी पहनी रहल छैथि, मुदा हुनका अपन राज्यक पागक ध्यान नहि छैन. मैथिली, भोजपुरी आओर मगधक गौरवपूर्ण संस्कृतिकक संगम के बावजूद आइ हम पंजाब आओर राजस्थाक संस्कृति उधार मांगि रहल छी. कतैत गरीब छी हम? आ इ हाल रहल त गरीबे रहब. समाद निकालबाक बहुत कारण अछि ओकर चर्चा समादक पहिल अंक में करब, एखन बस एतबै कहब जे समाद मिथिला में होयवाला संपूर्ण छोट आओर पैघ घटना के अहां तक पहुंचायत. हमर प्रयास मात्र मिथिलाक विकास अछि. हम कियेक गरीब छी आ हमर विकास केना होयत ऐहि संबंध में जे अखबार छापत समाद में ओकरा साभार स्थान भेटत. हमरो लग अछि संस्कृति, हमरो लग अछि विज्ञान आओर हमरो लग अछि ओ तमाम गुण जे हमरा मराठी, बंगाली आओर तमिल जेका अगल बना सकैत अछि. हम भारतीय छी, मुदा हम भारतीय बनबाक चक्कर में कखनो पंजाबी त कखनों राजस्थानी बनि जाइत छी. एकटा हिंदी कविक कथन हमरा लोकनि पर सटीक बैसैत अछि- दू जे को जानने कि खवाइश जा पाला मन में, सोचा नहि था अपना पहचान भूला दूंगा.

अहांक समदिया